# सी एन आर राव

## KV KNOWLEDGEWARE

अंतरिक्ष में भारत की ऊंची छलांग का ईंधन मुहैया कराने वाले प्रख्यात वैज्ञानिक सीएनआर राव को भी भारत रत्न से नवाजा गया है। 79 वर्षीय राव फिलहाल जवाहर लाल नेहरू सेंटर फार एडवांस एटॉमिक रिसर्च के मानद अध्यक्ष हैं और प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार परिषद के प्रमुख हैं।

सचिन के अलावा पिछले साल ही पद्मविभूषण से सम्मानित प्रख्यात रसायन वैज्ञानिक सीएनआर राव को भी भारत रत्न से नवाजा गया है। अंतरिक्ष में भारत की ऊंची छलांग के इसरो कार्यक्रम में तो उनकी सेवाएं रही ही हैं। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के वैज्ञानिक सलाहकार रहे राव बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पढ़े और कानपुर आइआइटी में अध्यापन भी किया।

प्रख्यात रसायन विज्ञानी प्रोफेसर चिंतामणि नागेश रामचंद्र राव को दुनिया भर में सॉलिड स्टेट और मैटेरियल केमिस्ट्री में उनकी विशेषज्ञता की वजह से जाना जाता है।

लगभग 1400 शोध पत्र और 45 किताबें लिख चुके प्रोफेसर राव का नाम दुनिया भर की विज्ञान अकादमियों में ब़ड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। प्रोफेसर राव सीवी रमन और पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के बाद तीसरे वैज्ञानिक हैं, जिन्हें भारत रत्न से नवाजा जाएगा।

रसायन विज्ञान के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के लिए दुनिया भर की विज्ञान अकादमियों में उनकी पहचान है और ज्यादातर उन्हें अपनी सदस्यता और फेलोशिप से नवाज चुके हैं। उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

डॉ. राव न सिर्फ न केवल बेहतरीन रसायनशास्त्री हैं बल्कि उन्होंने देश की वैज्ञानिक नीतियों को बनाने में भी अहम भूमिका निभाई है। इस समय डॉ. राव प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं। रसायन शास्त्र की गहरी जानकारी रखने वाले राव फ़िलहाल बंगलौर स्थित जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिचर्स में कार्यरत हैं. दुनियाभर की प्रमुख वैज्ञानिक संस्थाएं, रसायन शास्त्र के क्षेत्र में उनकी मेधा का लोहा मानती हैं. वे दुनियाभर के उन चुनिंदा वैज्ञानिकों में से एक हैं जो तमाम प्रमुख वैज्ञानिक शोध संस्थाओं के सदस्य हैं. अमरीका से अपनी डॉक्टरेट की उपाधि लेने के बाद राव ने कैलिफोर्निया और बर्कले यूनिवर्सिटी में रिसर्च एसोसिएट की हैसियत से काम किया और वर्ष 1959 में भारत लौटकर बंगलौर स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में काम करना शुरू किया.

इसके बाद वे आईआईटी कानपुर चले गए लेकिन वर्ष 1959 में दोबारा बंगलौर आ गए जहां उन्होंने मटेरियल साइंस सेंटर और सॉलिड स्टेट कैमिकल यूनिट स्थापित की थी. उनकी इस पहल को वैज्ञानिक जगत में महत्वपूर्ण कदम माना जाता है.

वह सन 1985 में पहली बार और सन 2005 में दूसरी बार प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष चुने जा चुके हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री राजीव गांधी, एचडी दैवेगोड़ा, और आई के गुजराल के कार्यकाल में परिषद के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया था. उन्होंने पदार्थ के गुणों और उनकी आणविक संरचना के बीच बुनियादी समझ विकसित करने में अहम भूमिका निभाई है।

सन 1964 में उन्हें इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज का सदस्य नामित किया गया। सन 1967 में फैराडे सोसाइटी ऑफ इंग्लैंड ने राव को मार्लो मेडल दिया। सन 1968 में राव भटनागर अवार्ड से नवाजे गए।

सन 1988 में जवाहरलाल नेहरू अवार्ड और सन 1999 में वह इंडियन साइंस कांग्रेस के शताब्दी पुरस्कार से सम्मानित हुए। भारत सरकार ने उन्हें 1974 में पदमश्री और 1985 में पदमविभूषण से सम्मानित किया। डॉ. राव को कर्नाटक सरकार ने कर्नाटक रत्न की उपाधि दी है।

डॉ. राव का जन्म 30 जून 1934 को बंगलुरू में हुआ। वह अपने माता पिता की इकलौती संतान हैं। स्कूली दिनों से ही उनका रुझान रसायनशास्त्र की ओर हो गया और इसी को उन्होंने कैरियर के रूप में अपनाया।

सन 1947 में राव ने अपनी हाईस्कूल परीक्षा पास की और विज्ञान में गहरी रुचि के कारण सेंट्रल कॉलेज बंगलुरू में दाखिला लिया। सिर्फ 17 की उम्र में ही बीएससी परीक्षा पास कर उन्होंने सबको चौंका दिया।

बीएससी के बाद एमएससी के दौरान उन्हें रसायनज्ञ पलिंग की पुस्तक, नेचर अफ दी केमिकल बांड को पहली बार पढ़ने का मौका मिला। इस पुस्तक ने राव के मन में अणुओं के संसार के प्रति गहरी उत्सुकता जगा दी।

**प्रसिद्धि की वजह**

प्रोफेसर राव सॉलिड स्टेट और मैटेरियल केमिस्ट्री में अपनी विशेषज्ञता की वजह से जाने जाते हैं। उन्होंने पदार्थ के गुणों और उनकी आणविक संरचना के बीच बुनियादी समझ विकसित करने में अहम भूमिका निभाई है।

**क्या है उपलब्धियां**

- 50 से अधिक वर्षों से रिसर्च में जुटे हैं
- 1400 शोध पत्र और 45 किताबें प्रकाशित
- कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित
- नामी विश्वविद्यालयों और विज्ञान अकादमियों की सदस्यता और फेलोशिप
- 1974 में पद्म श्री और 1985 में पद्म विभूषण से सम्मानित
- इंटरनेशनल सेंटर ऑफ मैटिरियल साइंस के निदेशक रहे
- लिनस पलिंग प्रोफेसर के तौर पर सम्मानित

**भारत रत्न मेरे लिए कंपलीट सरप्राइज : राव बंगलुरू ।** भारत रत्न की घोषणा सीएनआर राव के लिए चौंकाने वाली थी। उन्होंने इसकी उम्मीद नहीं की थी। राव ने इसकी घोषणा सुनने के बाद कहा कि यह मेरे लिए कंपलीट सरप्राइज है। मैं यह पुरस्कार अपनी पत्नी, परिवार, अपने बच्चों और छात्र-छात्राओं को समर्पित करता हूं। राव ने बंगलुरू हवाईअड्डे पर पत्रकारों से कहा कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उन्हें फोन कर भारत रत्न के लिए चुने जाने की बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा, आपने देश और विज्ञान के लिए काफी काम किया है। राव ने कहा कि उन्होंने विज्ञान और देश के लिए 54 साल तक काम किया है और एक भारतीय होने का उन्हें गर्व है। अगर मुझे भारतीय होने का गर्व नहीं होता तो मैं कहीं और होता। मेरे लिए भारत रत्न बिल्कुल चौंकाने वाला है।

राव के पास दुनिया भर के विश्वविद्यालयों की 60 मानद पीएचडी डिग्रियां हैं और भारतीय वैज्ञानिक समुदाय में वह एक आइकन की तरह देखे जाते हैं। राव ने कहा, मैं मैसूर का रहने वाला हैं। मैं एक वैज्ञानिक को यह सम्मान दिए जाने का आभारी हूं।

## भारत रत्न

यह पुरस्कार हमारे देश का उच्चतम नागरिक सम्मान है, जो कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण सेवा के लिए तथा उच्चतम स्तर की लोक सेवा को मान्यता देने के लिए प्रदान किया जाता है। इस सम्मान के तहत 35 मिमी व्यास वाला स्वर्ण पदक दिया जाता है। पीपल के पत्ते के आकार वाले इस पदक के ऊपरी हिस्से में सूर्य और नीचे हिंदी भाषा में 'भारत रत्न' लिखा होता है। इसके पीछे की ओर शासकीय संकेत और आदर्श-वाक्य लिखे होते हैं। इसे सफेद फीते में डालकर गले में पहनाया जाता है। 13 जुलाई 1977 से 26 जनवरी 1980 के बीच यह पुरस्कार लंबित रहा।

## इतिहास:

भारत रत्न पुरस्कार की परंपरा 1954 में शुरू हुई थी। सबसे पहला पुरस्कार प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन को दिया गया था। तब से अनेक विशिष्ट जनों को अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता पाने के लिए यह पुरस्कार प्रस्तुत किया गया है। इस पुरस्कार को पाने वाले गैर भारतीय भी हैं क्योंकि इसका कोई लिखित प्रावधान नहीं है कि भारत रत्न केवल भारतीय नागरिकों को ही दिया जाए। पूर्व में यह सम्मान भारतीय नागरिक बन चुकी एग्नेस गोंखा बोजाखियू यानी मदर टेरेसा और खान अब्दुल गफ्फार खां एवं नेल्सन मंडेला (1990) को मिल चुका है। यह भी अनिवार्य नहीं है कि भारत रत्न सम्मान हर वर्ष दिया जाए। पिछली बार यह सम्मान वर्ष 2009 में पंडित भीमसेन जोशी को दिया गया था।

प्रकार : नागरिक,  श्रेणी : राष्ट्रीय,

पहला पुरस्कार : 1954

कुल (अब तक): 43

खास बातें

- 43 में 11 शख्सियतों को मरणोपरांत यह सम्मान दिया गया

- साल 2001 और 2009 के बीच पहली बार सात सालों के दौरान कोई भारत रत्न पुरस्कार नहीं दिया गया

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस को मरणोपरांत दिया गया भारत रत्न सम्मान उनके परिवार वालों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। देश के इस सर्वोच्च नागरिक सम्मान से जुड़ा यह पहला मामला है, जब इसे अस्वीकार किया गया- किसी साल विशेष में दिए जा सकने वाले भारत रत्न पुरस्कारों की कुल संख्या-3